# भोपाल शहर की एकाकी जीवनव्यापन करने वाली एवं विवाहित महिलाओं में समायोजन का अध्ययन

प्रो.नीरजा शर्मा,
सतत शिक्षा एवं विस्तार विभाग,
बरकतउल्ला वि.वि., भोपाल

डॉ क्रांति वर्मा,
विक्टोरिया कालेज ऑफ एजूकेशन, भोपाल

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भोपाल शहर की एकाकी जीवनव्यापन करने वाली एवं विवाहित महिलाओं में समायोजन के स्तर को ज्ञात करना था। न्यादर्श हेतु भोपाल शहर में निवासरत 500 महिलाओं को उददेश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा चुना, जिनमें 250 एकाकी एवं 250 विवाहित थी, जिनकी उम्र 25 वर्ष से 60 वर्ष तक के बीच थी। समायोजन के मापन के लिए स्वनिर्मित समायोजन परिसूची का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष में एकाकी जीवनव्यापन करने वाली महिलाओं में, विवाहित महिलाओं की अपेक्षा समायोजन स्तर निम्न पाया गया।

## प्रस्तावना

हमारा जीवन चुनोतियों एवं संघर्षो से परिपूर्ण है। बालकपन से हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढ़ग से जीवन संग्राम की इस लडाई को लडता जाता है वह उतने ही अच्छे रूप से सफलता से प्रगति करता रहता है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त जीवन में हम बहुत कुछ चाहते हैं और यही चाह हमें पल–पल संघर्ष करने को प्रेरित करती है, प्रत्येक व्यक्ति कोशिश करता है, कि उसकी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति से जुडी हुई उसकी कोशिशों तथा परिस्थितियों के बीच संतुलन बना रहे। अगर वह यह संतुलन कर अपने और अपने वातावरण के बीच खट–पट नहीं होने देता तो वह समायोजित कहा जाता है।

आधुनिक परिवेश में महिलाएँ जीवन के हर क्षेत्र जैसे शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी, वित्तीय एवं सैन्य सेवाओं आदि में अपना उत्कृष्ट योगदान देकर देश के विकास में सहायता कर रही हैं, साथ ही साथ पारिवारिक दायित्वों को भी बखूबी निभा रही हैं। वे किसी भी कार्य में पुरूषों से कमतर नही आंकी जा सकती। आज भारतीय समाज में महिलाओं को पुरुषों के समान सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक क्षेत्रों में नवीन अधिकार प्राप्त हुए हैं तथा अनेक क्षेत्रों में उन्होंने पुरुषों से अधिक श्रेष्ठता हासिल की है। लेकिन आज भी हमारा समाज पुरूष प्रधान ही है। महिलाएं इस समाज में अकेले सुखमय जीवन व्यापन नही कर सकती। एकाकी महिलाओं को समाज में अधिक विपरीत परिस्थितयों का सामना करना पडता है। आधुनिक परिवेश में एकाकी महिलाओं के समायोजन स्तर को जानने के लिए प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यक्ता है।

**समायोजन** – प्रत्येक व्यक्ति को अपने आस–पास की हर प्रकार की परिस्थतियों ओर अपने व्यवहार में संतुलन रखना पडता है चूंकि व्यक्ति के आस–पास की परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं इसलिए समायोजन एक सतत प्रक्रिया है, जो कि जीवन भर चलती है।

**बोरिंग, लेगफेल्ड व वेल्ड के अनुसार .**

''समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है''।

**गेट्स के अनुसार .**

''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित संबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

**गुप्ता एवं अस्थाना (2008)** ने ''विवाहित एवं अविवाहित कामकाजी महिलाओं में सामाजिक सहयोग का महत्व'' का अध्ययन किया, निष्कर्ष में पाया गया, कि विवाहित कामकाजी महिलायें अविवाहित महिलाओं की अपेक्षा अधिक समायोजित थी।

**कुमार एंव श्रीवास्तव (2007)** ने ''स्कूल से सेवानिवृत अध्यापिकाओं एवं घरेलू महिलाओं में सामाजिक सहयोग एवं समायोजन'' का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया, कि सेनानिवृत

अध्यापिकाओं में घरेलू महिलाओं की अपेक्षा समायोजन बेहतर एवं दोनों समूहों में सामाजिक सहयोग की स्थिति समान थी।

## समस्या कथन

''भोपाल शहर की एकाकी जीवनव्यापन करने वाली एवं विवाहित महिलाओं में समायोजन का अध्ययन ''

## उद्देश्य

भोपाल शहर की एकाकी जीवनव्यापन करने वाली एवं विवाहित महिलाओं में समायोजन के स्तर को ज्ञात करना।

## परिकल्पना

एकाकी जीवनव्यापन करने वाली महिलाओं में विवाहित महिलाओं की अपेक्षा समायोजन का स्तर निम्न पाया जाता है ।

## शोध प्रविधि

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श हेतु भोपाल शहर में निवासरत 500 महिलाओं को उददेश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा चुना, जिनमें 250 एकाकी एवं 250 विवाहित थी, जिनकी उम्र 25 वर्ष से 60 वर्ष तक के बीच थी। प्रस्तुत शोध कार्य में समायोजन के मापन के लिए स्वनिर्मित समायोजन परिसूची का उपयोग किया गया है, जिसमें समायोजन को चार आयामों जैसे गृह समायोजन, समाज समायोजन, स्वास्थ समायोजन एवं संवेग समायोजन में बॉटा गया है। प्रत्येक आयाम से संबंधित 10 प्रश्नों को मापनी में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार मापनी में 40 प्रश्न रखे गये हैं। प्रस्तुत समायोजन परिसूची की विश्वसनीयता गुणांक परीक्षण पुन परीक्षण विधि विधि द्वारा .97 पाया गया।

समायोजन परिसूची की वेधता ज्ञात करने के लिए कारक विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया। इस विधि द्वारा गृह समायोजन कारक का वेधता गुणांक ·88, स्वास्थ समायोजन कारक का वेधता

गुणांक ·90, समाज समायोजन कारक का वेधता गुणांक ·84 तथा संवेगात्मक समायोजन कारक का वेधता गुणांक ·86 पाया गया।

प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

**निष्कर्ष**

**एकाकी जीवनव्यापन करने वाली महिलाओं में विवाहित महिलाओं की अपेक्षा समायोजन का स्तर निम्न पाया जाता है**

**तालिका क्र. 1**

| समूह | संख्या | मध्यमान | प्रमाप विचलन | प्रमाप विभ्रंम | टी–परीक्षण | सार्थकता (.05स्तर) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एकाकी महिलायें | 250 | 45·8 | 12·38 | ·783 | 15·33 | सार्थक |
| ववाहित महिलायें | 250 | 57·90 | 4·32 | ·283 | | |

व्याख्या – उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है, कि एकाकी जीवनव्यापन करने वाली महिलाओं एवं विवाहित महिलाओं के समायोजन स्तर का मध्यमान क्रमशः 45·8 एवं 57·90 है। इस प्रकार विवाहित महिलाओं के समायोजन स्तर का औसत अपेक्षाकृत अधिक है।

तालिका से स्पष्ट है, कि परिकलित टी परीक्षण का मान 15·33 है जबकि df =498 के लिए ·05 सार्थकता पर टी परीक्षण का सारणीमान 1·96 है । अतः सारणीमान से परकलित मान अधिक है अर्थात् 15.33 > 1.96 । इस प्रकार एकाकी जीवनव्यापन करने वाली एवं विवाहित महिलाओं के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होता है।

अतः यह कहते हैं, कि एकाकी जीवनव्यापन करने वाली महिलाओं में, विवाहित महिलाओं की अपेक्षा समायोजन स्तर निम्न पाया जाता है।

इस प्रकार परिकल्पना सत्य है एवं स्वीकृत होती है।

**आरेख क्र. 1**

**''एकाकी जीवनव्यापन करने वाली एवं विवाहित महिलाओं के समायोजन के प्राप्त मध्यमानों का आरेखीय प्रस्तुतीकरण''**

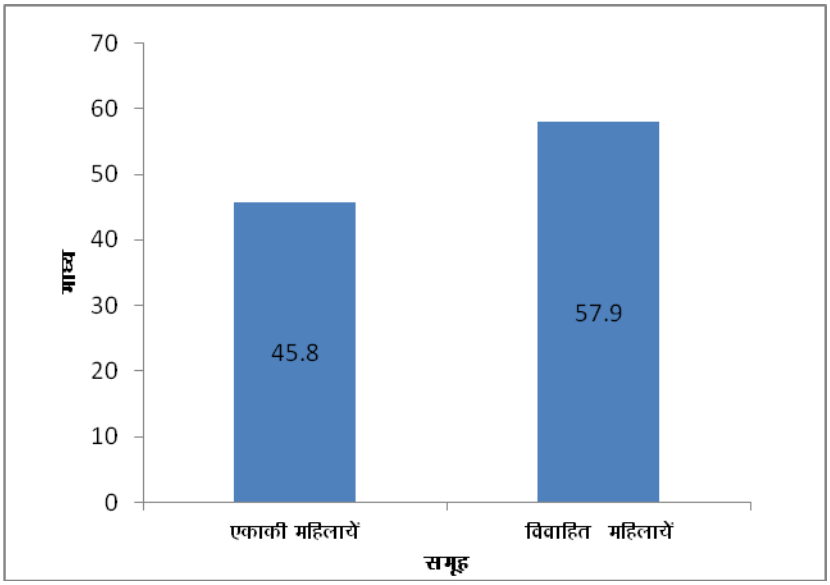


व्याख्या – आरेख क्र. 1 के अवलोकन से स्पष्ट है, कि एकाकी जीवनव्यापन करने वाली एवं विवाहित महिलाओं की समायोजन के मध्यमान क्रमशः 45·8 एवं 57·9 है। इस प्रकार विवाहित महिलाओं के समायोजन स्तर का औसत अपेक्षाकृत अधिक है।

स्पष्ट है, एकाकी जीवनव्यापन करने वाली महिलाओं में, विवाहित महिलाओं की अपेक्षा समायोजन का स्तर निम्न पाया जाता है।

इसका कारण आधुनिक समाज में इतनी प्रगति के पश्चात भी एकाकी महिलाओं के प्रति समाज की सोच में परिवर्तन का न होना हौ सकता है। आधुनिक महिला शिक्षित है, स्वतंत्र है, स्वावलबी है, सक्षम है लेकिन समाज में इतनी उन्नति के पश्चात भी एकाकी महिलाओं के लिए सामाजिक सहयोग का अभाव है।

**सुझाव –**

एकाकी महिलाओं में समायोजन के स्तर को बढाने के लिये सामाजिक एवं पारिवारिक सहयोग दिया जाये। एकाकी महिलाओं को स्वतत्रंता पूर्वक जीवनयापन करने के लिये समाज के सदस्य अपनी रूढीवादी मानसिकता में परिवर्तन करें।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


एस. के. गुप्ता (2008**), शैक्षिक मनोविज्ञान,** प्रिन्टेज हॉल इण्डिया, नई दिल्ली

कुमार रीता एंव श्रीवास्तव आराधना (2007), **स्कूल से सेवानिवृत अध्यापिकाओं एवं घरेलू महिलाओं में सामाजिक सहयोग एवं समायोजन,** जनरल ऑफ सायॅकोलाजीकल रिर्सच, 51

गुप्ता डिम्पल एवं अस्थाना मधु (2008), **विवाहित एवं अविवाहित कामकाजी महिलाओं में सामाजिक सहयोग का महत्व,** एशियन जनरल ऑफ सायॅकोलाजी एण्ड एजुकेशन,41

राजपूत जे.एस. (1988–1992), **फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिर्सच,** एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली vol- II

राजपूत जे.एस. (1993–2000), **सिक्सथ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिर्सच,** एन. सी. ई. आर. टी. ,नई दिल्ली, vol- I

सिंह रामपाल एवं ओ. पी. शर्मा (2002), **शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी**, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

कौर जी., शर्मा पी. के. एवं शर्मा एन. के. (2008), **सिक्ख महिलाओं के सन्दर्भ में वैवाहिक समायोजन का अध्ययन,** एशियन जनरल ऑफ सायॅकोलाजी एण्ड एजुकेशन, 41